वितृष्णा

मृदुला गर्ग

वितृष्णा

मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग

जन्म : 25 अक्तूबर, 1938।

जन्मस्थान : कलकत्ता (प. बंगाल)।

शिक्षा : दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए.।

तीन-चार वर्षों तक अध्यापन करने के बाद 1970 से निरंतर लेखन-कार्य।

प्रकाशित पुस्तकें : उसके हिस्से की धूप, वंशज, चित्तकोबरा, अनित्य, मैं और मैं (उपन्यास), कितनी कैदें, टुकड़ा-टुकड़ा आदमी, डैफोडिल जल रहे हैं, ग्लेशियर से, उर्फ सैम (कहानी-संग्रह); एक और अजनबी (नाटक)।

'उसके हिस्से की धूप' का स्वयं अंग्रेजी में अनुवाद तथा 'स्काई स्क्रेपर' नाम से अंग्रेजी में ही अनूदित-संपादित विभिन्न हिंदी कहानियाँ। कई भारतीय भाषाओं के अलावा जर्मन, चेक, अंग्रेजी और रूसी भाषाओं में भी कहानियों के अनुवाद प्रकाशित।

मध्य प्रदेश साहित्य परिषद से 'उसके हिस्से की धूप' तथा आकाशवाणी द्वारा 'एक और अज़नबी' नामक कृतियों पुरस्कृत।

वितृष्णा

डेढ़ बजनेवाला है। दिन का डेढ़। सूरज ठीक सिर पर है। धूप ने सड़क को नंगा कर रखा है। पास कहीं कोई पेड़ भी नहीं कि झीनी चादर की ओट ही दे दे।

मोटरसाइकिल के हत्थे को हाथ से थामे दिनेश बेमतलब सड़क के किनारे खड़ा है। हेलमेट के नीचे भट्ठी सुलग उठी थी। उतारकर सीट पर रख लिया है। अब आसमान नंगे सिर पर कोड़े बरसा रहा है। सिर, माथे और चेहरे से बहकर पसीना कमीज के कॉलर के नीचे जमा हो रहा है। गीली कमीज पीठ पर चिपक रही है। हाथँ-पाँव चिपचिपा रहे हैं। सूरज की तीखी चौंध बेसहारा आँखों के आगे लाल-नारंगी गोले नचा रही है।

ऐसे में किसी को भी घर की याद आ सकती है। धूप और बारिश से बचने के लिए ही आदमी घर बनाता है। चार दीवारें और एक छत।

यहीं सामने तो उसका घर है। सड़क के उस पार। मोटरसाइकिल को घसीटकर चार कदम ले जाना होगा। आँगन पार करके बीसेक सीढ़ियाँ चढ़ेगा तो दरवाजा खोलने-भर की देर होगी। वह घर के अंदर होगा। कुल मिलाकर दो मिनट भी नहीं लगेंगे।

उसने एक बार फिर कलाई पर बँधी घड़ी देखी। हाँ, डेढ़ बजा चाहता है। यही ठीक वक्त है। शालिनी खाना खा रही होगी। और देर की तो वह अपने कमरे में जाकर सो रहेगी। घंटी बजेगी तो आकर दरवाजा खोलेगी जरूर, पर उस वक्त उसका चेहरा...दिनेश के लिए बर्दाश्त करना मुश्किल हो जाता है।

वह आएगी, आहिस्ता-आहिस्ता, पैरों की आहट से वह पहचान लेगा-उसकी चाल हमेशा यकसाँ रहती है-वह आएगी, दरवाजे की चटखनी नीचे गिराएगी और वापस लौट जाएगी। ठेलकर दरवाजा दिनेश को ही खोलना पड़ेगा। अंदर घुसने पर वापस जाती उसकी पीठ की एक झलक देख पाएगा, उसका चेहरा नहीं। और फिर खटाक, उसके कमरे का दरवाजा बंद हो जाएगा। वह इधर बाहरवाले कमरे में रह जाएगा, जिसे वे बैठक और खाने के कमरे की तरह इस्तेमाल करते हैं। खाने की मेज़ पर करीने से खाना लगा होगा। एक थाली, न ज्यादा बड़ी, न छोटी। उसमें दो कटोरियाँ, एक चम्मच, पास रखा एक गिलास, ट्रे में लगे सब्जियों के दो डोंगे, परोसने

को दो बड़े चम्मच, कपड़े से ढकी चार रोटियाँ। दिनेश आराम से हाथ-मुँह धोए, पीछे वॉशबेसिन पर साफ तौलिया टँगा होगा, फ्रिज से ठंडे पानी की बोतल और दही निकाले और खाना खा ले। इच्छा हो तो रसोईघर में जाकर खाना गरम भी कर सकता है। गैस के चूल्हे के पास ही दियासलाई रखी होगी और धुली-मँजी कड़ाही भी। शिकायत की गुंजाइश नहीं है।

खाना खाकर वह अपने कमरे में आराम कर सकता है। बिस्तर के पास मेज पर छोटी-सी डिबिया में सौंफ-इलायची रखी रहती है। खा ले और सो जाए। न चाहे तो न सोए।

उस पर किसी किस्म का दबाव नहीं है। पाँच बजे शालिनी उठती है तो चाय बनाकर मेज पर रख देती है। अपना प्याला लेकर वह अक्सर खिड़की पर चली जाती है और बाहर देखती रहती है। दिनेश जानता है, अगर वह भी अपना प्याला लेकर खिड़की पर गया तो शालिनी बैठक में लौट आएगी और कोई पत्रिका खोलकर बैठ जाएगी।

अपने ही घर में समय काटना कितना मुश्किल होता है। चार बजे से वह बाहर निकलने की योजना बनाने लगता है। पर पाँच बजे से पहले निकलने पर दरवाजा बंद कर लेने के लिए शालिनी को पुकारना होगा। फिर वह चाहे कितनी भी देर इंतजार क्यों न करे, दरवाजे में चटखनी लगाने वह तभी आएगी जब वह घर से निकल चुका होगा, पहले नहीं। इससे तो...करवट बदलते-बदलते पाँच बज जाएँ...डेढ़ बज गया। अब घर पहुँच जाना चाहिए। वह जानता है, शालिनी को दोपहर में खाना खाकर सोने की आदत है। नींद में विघ्न पड़ने से उसके सिर में दर्द हो जाता है और कभी-कभी यह दर्द तीन-तीन दिन तक ठीक नहीं होता। वह नहीं चाहता, उसके देर से घर पहुँचने की वजह से उसके सिंर में दर्द हो।

अभी घर पहुँच गया तो हो सकता है, शालिनी खाने की मेज पर बैठी मिल जाए। तब घंटी बजाने की जरूरत नहीं होगी। दरवाजा खाने की मेज़ के ठीक सामने है और खाना खाते वक्त वह चटखनी नहीं लगाती, ढुकाकर छोड़ देती है। ठेलकर भीतर आया जा सकता है। शालिनी सामने बैठी मिलेगी। उसके सामने मेज पर दिनेश के खाने का इंतजाम होगा। वही एक थाली, एक गिलास, एक चम्मच, दो कटोरियाँ, सब्जी के डोंगे, कपड़े से ढकी रोटियाँ...सलीके से अदा किया गया ठंडा फर्ज।